Academe *Journal of Education & Psychology* *ISSN: 2249-040X*
Volume-15, Issue-1, Year-2025 (January-June) *Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)*
PP: 381-388 *Journal Website www.academejournal.in*

इंटरनेट पत्रकारिता का प्रभाव : सामाजिक, सांस्कृतिक एवं लोकतांत्रिक परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

अमरेंद्र कुमार

नेट

शोध-सारांश :–

वर्तमान समय सूचना और प्रौद्योगिकी का युग है, जहाँ संचार माध्यमों की प्रकृति और कार्यप्रणाली में तीव्र परिवर्तन देखने को मिल रहा है। इंटरनेट के आगमन ने पत्रकारिता के स्वरूप को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया है। पारंपरिक पत्रकारिता जहाँ प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों तक सीमित थी, वहीं इंटरनेट पत्रकारिता ने समाचारों को वैश्विक, त्वरित और बहुआयामी स्वरूप प्रदान किया है। आज समाचार केवल अख़बारों या टेलीविज़न चैनलों तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि मोबाइल फोन, सोशल मीडिया, वेब पोर्टल, ब्लॉग, पॉडकास्ट और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्मों के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति तक तत्काल पहुँच रहे हैं।

इंटरनेट पत्रकारिता ने सूचना के लोकतंत्रीकरण को बढ़ावा दिया है। इसने समाज के प्रत्येक वर्ग को अभिव्यक्ति का मंच प्रदान किया है तथा नागरिक सहभागिता को नई दिशा दी है। डिजिटल मीडिया ने संवाद की प्रक्रिया को अधिक सहभागी और पारदर्शी बनाया है। वर्तमान समय में कोई भी व्यक्ति केवल समाचारों का उपभोक्ता नहीं, बल्कि सूचना निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार भी बन गया है। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों ने जनमत निर्माण और लोकतांत्रिक चेतना को व्यापक रूप से प्रभावित किया है।

दूसरी ओर, इंटरनेट पत्रकारिता के समक्ष अनेक गंभीर चुनौतियाँ भी उपस्थित हुई हैं। फेक न्यूज़, अपुष्ट सूचनाएँ, ट्रोल संस्कृति, साइबर अपराध, डेटा गोपनीयता का संकट तथा मीडिया नैतिकता से जुड़े प्रश्न आज के समय में अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो गए हैं। समाचारों की तात्कालिकता और प्रतिस्पर्धा के कारण कई बार तथ्य-सत्यापन की प्रक्रिया प्रभावित होती है, जिससे पत्रकारिता की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगते हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र में इंटरनेट पत्रकारिता के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और लोकतांत्रिक प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि इंटरनेट आधारित पत्रकारिता ने समाज, संस्कृति और लोकतांत्रिक व्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया है। शोध में विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि इंटरनेट पत्रकारिता ने संचार व्यवस्था को अधिक गतिशील,

© Copyright @ Authors

सहभागी और प्रभावशाली बनाया है, किंतु इसकी विश्वसनीयता और नैतिकता को बनाए रखने के लिए मीडिया साक्षरता, तथ्य-सत्यापन तथा उत्तरदायी पत्रकारिता की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द : **इंटरनेट पत्रकारिता, डिजिटल मीडिया, ई-पत्रकारिता, सोशल मीडिया, लोकतंत्र, सूचना समाज, मीडिया नैतिकता, फेक न्यूज़, डिजिटल संचार।**

प्रस्तावना :–

मानव सभ्यता के विकास में संचार माध्यमों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। प्रारंभिक समय में मनुष्य संदेशों के आदान-प्रदान के लिए मौखिक परंपराओं, संकेतों तथा दूत व्यवस्था का उपयोग करता था। कालांतर में मुद्रण तकनीक के विकास ने पत्रकारिता को संगठित स्वरूप प्रदान किया। समाचार-पत्रों ने समाज में जागरूकता और जनमत निर्माण की प्रक्रिया को सशक्त किया। इसके बाद रेडियो और टेलीविज़न के आगमन ने जनसंचार के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन उत्पन्न किए।

इक्कीसवीं शताब्दी में इंटरनेट ने पत्रकारिता को एक नई दिशा और गति प्रदान की। इंटरनेट पत्रकारिता पत्रकारिता का वह आधुनिक स्वरूप है, जिसमें समाचारों का संकलन, संपादन, प्रकाशन और प्रसारण डिजिटल माध्यमों तथा ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्मों के द्वारा किया जाता है। यह पत्रकारिता पारंपरिक पत्रकारिता की तुलना में अधिक त्वरित, व्यापक और सहभागी है।

आज इंटरनेट पत्रकारिता केवल सूचना प्रसारण का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि यह सामाजिक संवाद, जनमत निर्माण और लोकतांत्रिक चेतना का एक प्रभावशाली उपकरण बन चुकी है। इंटरनेट के माध्यम से समाचारों का वैश्विक स्तर पर प्रसार संभव हो पाया है। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों ने प्रत्येक व्यक्ति को अपनी बात रखने का अवसर प्रदान किया है। परिणामस्वरूप पत्रकारिता का स्वरूप अधिक लोकतांत्रिक और सहभागी हुआ है।

डिजिटल तकनीकों ने समाचारों की प्रकृति को भी परिवर्तित किया है। अब समाचार केवल लिखित रूप में नहीं, बल्कि वीडियो, ऑडियो, इन्फोग्राफिक्स, लाइव स्ट्रीमिंग और मल्टीमीडिया प्रस्तुति के रूप में भी उपलब्ध हैं। इससे सूचना अधिक प्रभावशाली और आकर्षक बन गई है।

हालाँकि इंटरनेट पत्रकारिता के अनेक सकारात्मक प्रभाव हैं, किंतु इसके साथ कुछ गंभीर चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। इंटरनेट पर सूचनाओं का तीव्र प्रसार कई बार अपुष्ट समाचारों और भ्रामक सूचनाओं को भी बढ़ावा देता है। फेक न्यूज़ और ट्रोल संस्कृति सामाजिक सौहार्द और

© Copyright @ Authors

लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए गंभीर खतरा बन चुके हैं। इसके अतिरिक्त, बाज़ारवाद और टीआरपी की प्रतिस्पर्धा ने पत्रकारिता की निष्पक्षता और नैतिकता को भी प्रभावित किया है।

ऐसी स्थिति में इंटरनेट पत्रकारिता के प्रभावों का गंभीर और संतुलित अध्ययन आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी आवश्यकता की पूर्ति का प्रयास है। इसमें इंटरनेट पत्रकारिता के सामाजिक, सांस्कृतिक और लोकतांत्रिक प्रभावों का विश्लेषण करते हुए उसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों का अध्ययन किया गया है।

उपलब्ध साहित्य–

इंटरनेट पत्रकारिता के संबंध में अनेक विद्वानों, शोधकर्ताओं और मीडिया विशेषज्ञों ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। संचार अध्ययन के क्षेत्र में यह व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है कि डिजिटल मीडिया ने पत्रकारिता की पारंपरिक संरचना और कार्यप्रणाली को गहराई से प्रभावित किया है।

संजय कुमार ने अपनी पुस्तक डिजिटल मीडिया और पत्रकारिता में उल्लेख किया है कि इंटरनेट पत्रकारिता ने सूचना के प्रसार को अत्यंत त्वरित और व्यापक बनाया है। उनके अनुसार डिजिटल मीडिया ने समाचारों की पहुँच को लोकतांत्रिक बनाया है, जिससे समाज के विभिन्न वर्गों को अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त हुआ है।

राकेश सिंह ने जनसंचार के आधुनिक आयाम में यह प्रतिपादित किया है कि इंटरनेट पत्रकारिता ने समाचारों की प्रस्तुति और उपभोग की प्रक्रिया को परिवर्तित कर दिया है। अब पाठक केवल सूचना प्राप्त करने वाला व्यक्ति नहीं रह गया, बल्कि वह समाचार प्रक्रिया में सक्रिय सहभागिता करने लगा है। रामगोपाल मिश्रा ने मीडिया और समाज में डिजिटल पत्रकारिता के सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करते हुए कहा है कि इंटरनेट आधारित मीडिया ने सामाजिक आंदोलनों को नई ऊर्जा प्रदान की है। महिला अधिकार, पर्यावरण संरक्षण और मानवाधिकार जैसे विषयों पर डिजिटल मीडिया ने व्यापक जनजागरण किया है।

दूसरी ओर, कुछ विद्वानों ने इंटरनेट पत्रकारिता के नकारात्मक प्रभावों पर भी प्रकाश डाला है। ओमप्रकाश शर्मा ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और पत्रकारिता में उल्लेख किया है कि समाचारों की तात्कालिकता और प्रतिस्पर्धा के कारण तथ्य-सत्यापन की प्रक्रिया प्रभावित होती है, जिससे पत्रकारिता की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगते हैं।

© Copyright @ Authors

ऑनलाइन पत्रकारिता पर किए गए अनेक शोधों में फेक न्यूज़, डेटा गोपनीयता, साइबर अपराध और ट्रोल संस्कृति को गंभीर चुनौतियों के रूप में देखा गया है। सोशल मीडिया आधारित पत्रकारिता में सूचनाओं की सत्यता और निष्पक्षता का संकट एक प्रमुख मुद्दा बन चुका है।

उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इंटरनेट पत्रकारिता ने समाज, राजनीति और संस्कृति को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्ष मौजूद हैं। इसलिए इसके प्रभावों का संतुलित और गहन अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

शोध-प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध-पत्र में गुणात्मक शोध-पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इसके अंतर्गत पुस्तकों, शोध-पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं, समाचार लेखों तथा डिजिटल माध्यमों से संबंधित सामग्री का अध्ययन किया गया है।

शोध में विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति को अपनाया गया है। इंटरनेट पत्रकारिता के विभिन्न आयामों– जैसे सामाजिक प्रभाव, सांस्कृतिक परिवर्तन, लोकतांत्रिक भूमिका, मीडिया नैतिकता और आर्थिक प्रभाव– का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

शोध के दौरान इंटरनेट पत्रकारिता के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों का संतुलित विश्लेषण किया गया है। साथ ही, समकालीन समाज में डिजिटल मीडिया की भूमिका और उसके प्रभावों को समझने का प्रयास किया गया है।

परिणाम एवं विमर्श–

1. सूचना तक व्यापक पहुँच–

इंटरनेट पत्रकारिता ने सूचना के लोकतंत्रीकरण को बढ़ावा दिया है। पहले समाचारों तक पहुँच सीमित थी और सूचना प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अख़बार, रेडियो या टेलीविज़न पर निर्भर रहना पड़ता था। किंतु आज इंटरनेट के माध्यम से व्यक्ति विश्व के किसी भी भाग की जानकारी तत्काल प्राप्त कर सकता है।

मोबाइल फोन और इंटरनेट सेवाओं के विस्तार ने ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में सूचना-सुलभता को बढ़ाया है। अब सामान्य नागरिक भी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय घटनाओं से जुड़ गया है। इससे समाज में जागरूकता और सूचना-साक्षरता का विकास हुआ है। इंटरनेट पत्रकारिता ने शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और प्रशासन से संबंधित सूचनाओं को भी जनसामान्य तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कोविड-19 महामारी के दौरान डिजिटल मीडिया ने लोगों तक आवश्यक सूचनाएँ पहुँचाने का कार्य किया, जिससे इसकी उपयोगिता और अधिक स्पष्ट हुई।

© Copyright @ Authors

2. लोकतांत्रिक चेतना का विकास–

लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और जनसहभागिता का अत्यंत महत्त्व होता है। इंटरनेट पत्रकारिता ने इन दोनों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों ने प्रत्येक व्यक्ति को अपनी राय व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया है।

डिजिटल मीडिया के माध्यम से नागरिक सरकार की नीतियों पर खुलकर चर्चा करते हैं और सामाजिक मुद्दों पर अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। इससे लोकतांत्रिक संवाद अधिक व्यापक और बहुआयामी हुआ है।

अरब स्प्रिंग, भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन और विभिन्न सामाजिक अभियानों में सोशल मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। भारत में भी अनेक सामाजिक आंदोलनों को डिजिटल मीडिया के माध्यम से व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ।

हालाँकि लोकतांत्रिक संवाद के इस विस्तार के साथ कुछ समस्याएँ भी सामने आई हैं। सोशल मीडिया पर नफरत फैलाने वाले संदेश, राजनीतिक दुष्प्रचार और ट्रोल संस्कृति लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए चुनौती बनते जा रहे हैं।

3. सामाजिक जागरूकता और जनसंचार–

इंटरनेट पत्रकारिता ने समाज में जागरूकता फैलाने का कार्य किया है। महिला अधिकार, दलित अधिकार, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा, स्वास्थ्य और मानवाधिकार जैसे विषयों पर डिजिटल मीडिया ने व्यापक जनजागरण किया है। ऑनलाइन अभियानों ने सामाजिक आंदोलनों को नई दिशा प्रदान की है। MeToo आंदोलन इसका प्रमुख उदाहरण है, जिसने महिलाओं के साथ होने वाले उत्पीड़न के मुद्दे को वैश्विक स्तर पर चर्चा का विषय बनाया।

डिजिटल मीडिया ने आपदा प्रबंधन और सामाजिक सहायता के कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्राकृतिक आपदाओं और महामारी जैसी परिस्थितियों में इंटरनेट पत्रकारिता ने सूचना और सहायता के समन्वय में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

4. फेक न्यूज़ और भ्रामक सूचनाएँ–

इंटरनेट पत्रकारिता की सबसे बड़ी चुनौती फेक न्यूज़ और अपुष्ट सूचनाओं का प्रसार है। सोशल मीडिया पर समाचार अत्यंत तीव्र गति से फैलते हैं, किंतु कई बार उनकी सत्यता की जाँच नहीं की जाती।

भ्रामक सूचनाएँ सामाजिक तनाव, हिंसा और भ्रम की स्थिति उत्पन्न कर सकती हैं। कई बार राजनीतिक और आर्थिक हितों के कारण झूठी खबरें जानबूझकर फैलायी जाती हैं।

© Copyright @ Authors

फेक न्यूज़ की समस्या ने पत्रकारिता की विश्वसनीयता को प्रभावित किया है। इससे लोगों का मीडिया पर विश्वास कम होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में तथ्य-सत्यापन और मीडिया साक्षरता अत्यंत आवश्यक हो जाती है।

5. सांस्कृतिक प्रभाव–

इंटरनेट पत्रकारिता ने वैश्वीकरण को बढ़ावा दिया है। विभिन्न देशों और संस्कृतियों के बीच संवाद और आदान-प्रदान की प्रक्रिया तेज़ हुई है। डिजिटल मीडिया के माध्यम से लोग विश्व की विविध संस्कृतियों से परिचित हो रहे हैं। हालाँकि इसके साथ उपभोक्तावादी संस्कृति और बाज़ारवादी प्रवृत्तियाँ भी बढ़ी हैं। विज्ञापन आधारित डिजिटल मीडिया कई बार सांस्कृतिक मूल्यों की अपेक्षा बाज़ार को अधिक प्राथमिकता देता है। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव युवाओं की जीवन-शैली, भाषा और सोच पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इसके कारण पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों और लोकसंस्कृति के समक्ष चुनौती उत्पन्न हुई है। इसके बावजूद इंटरनेट पत्रकारिता ने क्षेत्रीय भाषाओं और लोकसंस्कृति को भी नया मंच प्रदान किया है। आज अनेक क्षेत्रीय समाचार पोर्टल और यूट्यूब चैनल स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित करने का कार्य कर रहे हैं।

6. मीडिया नैतिकता का संकट–

पत्रकारिता का मूल उद्देश्य निष्पक्ष और तथ्यपरक सूचना प्रदान करना है। किंतु इंटरनेट पत्रकारिता में तात्कालिकता और प्रतिस्पर्धा के कारण कई बार पत्रकारिता की नैतिकता प्रभावित होती है।

समाचारों को सबसे पहले प्रसारित करने की होड़ में कई मीडिया संस्थान तथ्य-सत्यापन की प्रक्रिया की उपेक्षा कर देते हैं। इससे अपुष्ट और भ्रामक सूचनाएँ प्रसारित होने लगती हैं।

इसके अतिरिक्त, क्लिकबेट संस्कृति और सनसनीखेज समाचारों की प्रवृत्ति भी बढ़ी है। दर्शकों और पाठकों को आकर्षित करने के लिए कई बार समाचारों को अतिरंजित रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

ऐसी स्थिति में पत्रकारिता के मूल्यों–निष्पक्षता, सत्यता और उत्तरदायित्व को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है।

7. आर्थिक परिवर्तन और डिजिटल मीडिया–

इंटरनेट पत्रकारिता ने मीडिया उद्योग की आर्थिक संरचना को भी प्रभावित किया है। पारंपरिक मीडिया जहाँ विज्ञापन और प्रिंट बिक्री पर निर्भर था, वहीं डिजिटल मीडिया ऑनलाइन विज्ञापन, सदस्यता मॉडल और प्रायोजित सामग्री पर आधारित हो गया है।

© Copyright @ Authors

डिजिटल मीडिया के कारण पारंपरिक समाचार-पत्रों की प्रसार संख्या में कमी आई है। कई समाचार संस्थानों ने ऑनलाइन संस्करण शुरू किए हैं।

यूट्यूब, ब्लॉगिंग और सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों ने स्वतंत्र पत्रकारिता को भी बढ़ावा दिया है। अब व्यक्ति स्वयं डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से पत्रकारिता कर सकता है। इससे पत्रकारिता का लोकतंत्रीकरण हुआ है, किंतु साथ ही गुणवत्ता और विश्वसनीयता की चुनौतियाँ भी बढ़ी हैं।

8. भविष्य की संभावनाएँ–

भविष्य में इंटरनेट पत्रकारिता का स्वरूप और अधिक विकसित होगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा पत्रकारिता, वर्चुअल रियलिटी और मशीन लर्निंग जैसी तकनीकें पत्रकारिता को नई दिशा प्रदान करेंगी।

एआई आधारित समाचार लेखन, डेटा विश्लेषण और स्वचालित तथ्य-जाँच की प्रक्रियाएँ पत्रकारिता को अधिक प्रभावशाली बना सकती हैं। किंतु इसके साथ नैतिक और कानूनी चुनौतियाँ भी उत्पन्न होंगी।

भविष्य की पत्रकारिता में तकनीकी दक्षता के साथ-साथ नैतिक उत्तरदायित्व भी अत्यंत महत्वपूर्ण होगा।

निष्कर्ष :–

इंटरनेट पत्रकारिता ने आधुनिक समाज की संचार व्यवस्था को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इसने सूचना के प्रसार को तीव्र, सरल और वैश्विक बनाया है। डिजिटल पत्रकारिता ने लोकतांत्रिक चेतना, सामाजिक जागरूकता और नागरिक सहभागिता को नई दिशा प्रदान की है। इंटरनेट आधारित पत्रकारिता ने सूचना के लोकतंत्रीकरण को बढ़ावा दिया है तथा समाज के विभिन्न वर्गों को अभिव्यक्ति का मंच प्रदान किया है। इसके माध्यम से सामाजिक आंदोलनों, जनजागरण अभियानों और लोकतांत्रिक संवाद को नई शक्ति मिली है। हालाँकि इसके साथ अनेक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, जिनमें फेक न्यूज़, मीडिया नैतिकता का संकट, डिजिटल असमानता, साइबर अपराध और बाज़ारवादी प्रवृत्तियाँ प्रमुख हैं। समाचारों की तात्कालिकता और प्रतिस्पर्धा के कारण कई बार पत्रकारिता की विश्वसनीयता प्रभावित होती है। अतः यह आवश्यक है कि इंटरनेट पत्रकारिता को उत्तरदायी, तथ्यपरक और नैतिक आधारों पर संचालित किया जाए। मीडिया साक्षरता और तथ्य-सत्यापन की प्रक्रिया को मजबूत बनाना समय की आवश्यकता है।

डिजिटल युग में इंटरनेट पत्रकारिता लोकतंत्र, समाज और संस्कृति के लिए एक महत्वपूर्ण शक्ति बन चुकी है। यदि इसे नैतिकता और उत्तरदायित्व के साथ संचालित किया जाए, तो यह

© Copyright @ Authors

सामाजिक विकास और लोकतांत्रिक सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम सिद्ध हो सकती है। वर्तमान समय में इंटरनेट पत्रकारिता जनसंचार का सबसे प्रभावशाली माध्यम बन चुकी है। यह केवल समाचारों के प्रसारण का साधन नहीं है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, लोकतांत्रिक जागरूकता और सांस्कृतिक संवाद का महत्वपूर्ण उपकरण भी है।

डिजिटल मीडिया ने समाज को अधिक जुड़ा हुआ और जागरूक बनाया है। इंटरनेट पत्रकारिता ने आम नागरिक को अभिव्यक्ति की शक्ति प्रदान की है तथा सूचना के प्रवाह को अधिक सहभागी बनाया है।

भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा पत्रकारिता और नई डिजिटल तकनीकों के कारण इंटरनेट पत्रकारिता का स्वरूप और अधिक विकसित होगा। ऐसे में पत्रकारिता के मूल्यों, निष्पक्षता और विश्वसनीयता को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक होगा।

समाज, सरकार, मीडिया संस्थानों और नागरिकों—सभी की जिम्मेदारी है कि इंटरनेट पत्रकारिता को सकारात्मक और उत्तरदायी दिशा प्रदान करें, ताकि यह लोकतंत्र और सामाजिक विकास के लिए प्रभावी माध्यम बन सके।

संदर्भ :–

1. कुमार, संजय — डिजिटल मीडिया और पत्रकारिता, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
2. सिंह, राकेश — जनसंचार के आधुनिक आयाम, दिल्ली : साहित्य भवन।
3. मिश्रा, रामगोपाल — मीडिया और समाज, जयपुर : राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
4. शर्मा, ओमप्रकाश — इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और पत्रकारिता, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन।
5. द्विवेदी, हर्षदेव — ऑनलाइन पत्रकारिता, नई दिल्ली।
6. कुमार, अर्जुन — डिजिटल संचार और मीडिया अध्ययन, पटना : ज्ञानदीप प्रकाशन।
7. वर्मा, सुधीर — मीडिया नैतिकता और समाज, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
8. विभिन्न शोध-पत्र, ई-जर्नल तथा ऑनलाइन मीडिया स्रोत।

© Copyright @ Authors